अध्याय
08

लोकतंत्र की चुनौतियाँ

सीखने का प्रतिफल:-

लोकतंत्र का अर्थ समझ सकेंगे और लोकतंत्र के समक्ष कौन-कौन सी चुनौतियां हैं और उसके समाधान के विषय में बच्चे जान सकेंगे।

लोकतंत्र में चुनौती का अर्थ

एक देश में लोकतांत्रिक व्यवस्था को सुनिश्चित बनाने के लिए आने वाली मुश्किलों को चुनौती कहते हैं। चुनौतियों पर हम जीत भी हासिल कर सकते हैं।

लोकतंत्र के सामने प्रमुख चुनौतियाँ

- लोकतंत्र की स्थापना-विश्व के एक चौथाई भाग में अभी भी लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था नहीं है। इन भागों में गैर लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था को समाप्त करना, सत्ता पर सेना के नियंत्रण को हटाना तथा संप्रभु एवं सक्षम शासन व्यवस्था स्थापित करना महत्वपूर्ण चुनौती है।
- लोकतंत्र का विकास एवं विस्तार-जिन देशों में लोकतंत्र है, वहां पर लोकतंत्र का विकास एवं विस्तार महत्वपूर्ण चुनौती है।लोकतांत्रिक देशों में स्थानीय सरकार को अधिकार संपन्न बनाना, लोकतंत्र के सिद्धांतों को लागू करना, महिलाओं तथा अल्पसंख्यक समूहों को उचित भागीदारी देना।
- लोकतांत्रिक संस्थाओं को सुधारना तथा मजबूत बनाना-लोकतांत्रिक संस्थाओं में सुधार करना एक महत्वपूर्ण चुनौती है ।
- भ्रष्टाचार, जातिवाद, वंशवाद, कट्टरवाद, क्षेत्रवाद, भाषावाद और तानाशाही प्रवृत्ति से लोकतंत्र को मुक्त करना एक बड़ी चुनौती है।

© JCERT not to be republished

भारत में लोकतंत्र के सामने चुनौतियाँ

- **अशिक्षा**– भारत में अभी भी 30% जनसंख्या निरक्षर है। निरक्षर लोगों में लोकतांत्रिक मूल्य समानता, स्वतंत्रता, न्याय और भाईचारे की भावना भरना एक मुश्किल काम है।

- **गरीबी**– भारत में आज भी 30% जनसंख्या गरीबी रेखा से नीचे जीवन जी रही है। गरीबी लोकतंत्र के राह में सबसे बड़ी बाधा है। अमीर वर्ग के लोग चुनाव के समय नोट के माध्यम से वोट खरीद कर सत्ता प्राप्त कर लेते हैं। अतः गरीब लोग सत्ता में भागीदारी से वंचित हो जाते हैं।

- **जातिवाद**– भारत में कहावत बन गया है कि रोटी और वोट जाति को देना चाहिए। इस वजह से योग्य, बुद्धिमान और कर्मठ उम्मीदवार चुनाव नहीं जीत पाते हैं।

- **धार्मिक कट्टरता**– यह लोकतंत्र के लिए सबसे खतरनाक है। जैसे पाकिस्तान, अफ़गानिस्तान, बांग्लादेश, भारत।

- **आर्थिक असमानता**– आर्थिक असमानता भारत के लिए एक गंभीर चुनौती है।

- **राजनीतिक हिंसा**– चुनाव के समय बूथ कैपचरिंग और हथियार के द्वारा मतदाताओं को धमकाना।

- **नक्सलवाद और अलगाववाद**– भारत के कुछ राज्यों में नक्सल गतिविधि और अलगाववाद की गतिविधि बढ़ रही है जो, लोकतंत्र के लिए एक गंभीर चुनौती है। जैसे झारखंड, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, जम्मू कश्मीर, असम, नागालैंड इत्यादि।

- अत्यधिक जनसंख्या-बढ़ती जनसंख्या को मूलभूत सुविधा उपलब्ध कराना एक गंभीर चुनौती है। जैसे भोजन, शुद्ध पेयजल, मकान, बिजली, शिक्षा, चिकित्सा, सड़क।

- **आतंकवाद**– आतंकवाद राजनीतिक अस्थिरता और असंतुलन की स्थिति उत्पन्न करता है!

- **लैंगिक भेदभाव**– भारत में आज भी महिलाओं को लोकसभा, राज्यसभा, विधानसभा और स्थानीय स्वशासन में पुरुषों के समान भागीदारी नहीं मिला है।

- **असंतुलित आर्थिक विकास**– भारत के कुछ राज्यों में कल कारखाने, उद्योग और कृषि का विकास ज्यादा हुआ है और कुछ राज्य अत्यधिक पिछड़े हैं।

- **क्षेत्रवाद और भाषावाद**– भारत में क्षेत्रवाद और भाषावाद लोकतंत्र के लिए गंभीर चुनौती खड़ी कर रही है।

राजनीतिक सुधारों पर विचार

राजनीतिक सुधार– लोकतंत्र के विभिन्न चुनौतियों के बारे में सुझाव या प्रस्ताव राजनीतिक सुधार कहलाता है। राजनीतिक सुधार को लोकतांत्रिक सुधार के नाम से भी जाना जाता है।

© JCERT not to be republished

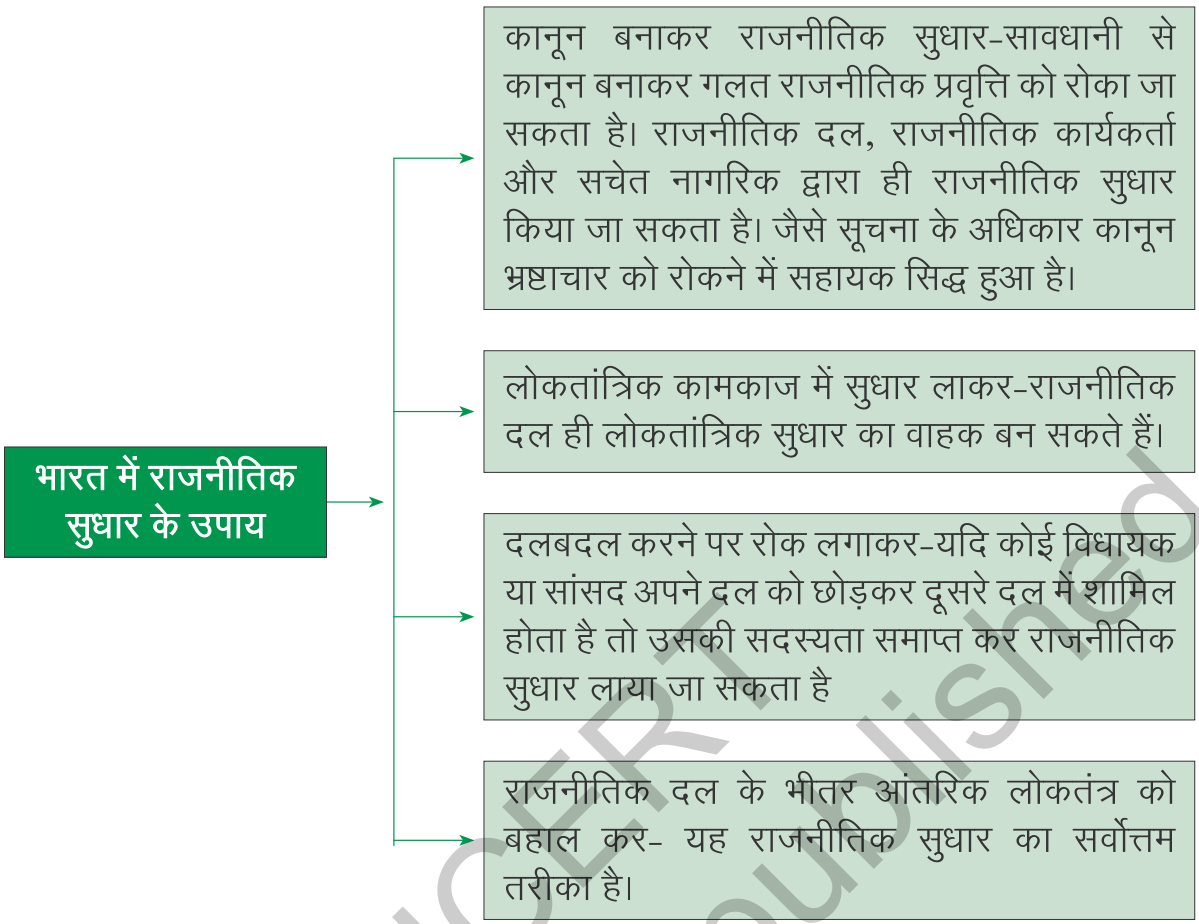

नोट- बेहतर कानून, स्वतंत्र और निष्पक्ष मीडिया, सचेत नागरिक संगठन और आदर्शात्मक राजनीतिक मूल्य ही लोकतंत्र को बेहतर बना सकते हैं।

नोट- हम चुनौतियों की चर्चा इसलिए करते हैं कि इसका समाधान करना संभव है।

© JCERT not to be republished

बहुविकल्पी प्रश्न

1. निम्नलिखित में से कौन लोकतंत्र की चुनौती है?

   क. लोकतंत्र को मजबूत करना

   ख लोकतंत्र का विस्तार करना

   ग लोकतंत्र के कार्य पद्धति में सुधार लाना

   घ उपरोक्त सभी

2. लोकतांत्रिक सुधार के तरीके हैं?

   क कानून बनाकर

   ख लोकतांत्रिक कामकाज में सुधार लाकर

   ग नागरिकों की राजनीतिक भागीदारी बढ़ाकर

   घ उपरोक्त सभी

3. लोकतंत्र के विभिन्न चुनौतियों के बारे में सुझाव को क्या कहा जाता है?

   क राजनीतिक सुधार

   ख लोकतांत्रिक सुधार

   ख उपरोक्त दोनों

   घ दोनों में से कोई नहीं

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 4. लोकतांत्रिक सुधार से क्या समझते हैं?

प्रश्न 5. लोकतंत्र की कौन-कौन सी चुनौतियाँ हैं?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 6. भारत में लोकतंत्र की चुनौतियाँ का विस्तार से वर्णन करें।

© JCERT not to be republished

Notes

© JCERT
not to be republished